



2026:AHC: 32734-DB

उच्च न्यायालय, इलाहाबाद

आपराधिक अपील संख्या- 2071/1989

सरभान सिंह एवं अन्य

.....अपीलकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलकर्ता(गण) के अधिवक्ता : राकेश कुमार राठौर, संजीव कुमार

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता : एजीए

न्यायालय संख्या-42

माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा

माननीय न्यायमूर्ति चवन प्रकाश

1- यह अपील सत्र विचारण संख्या 370 वर्ष 1987 में अपर सत्र न्यायाधीश, एटा द्वारा पारित निर्णय एवं आदेश दिनांक 17.10.1989 के विरुद्ध दायर की गई है, जिसके द्वारा अपीलार्थी संख्या 1, सरभान सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के अंतर्गत आजीवन कारावास, और अपीलार्थी संख्या 2, विजय सिंह को धारा 211 भा.द.सं. के अंतर्गत 2,000/- रुपये का व्यक्तिगत बंधपत्र निष्पादित करने की सजा सुनाई गई थी, जिसके व्यतिक्रम में उसे तीन वर्ष का सश्रम कारावास भुगतना होगा।

2- दिनांक 14.10.1986 को घटित एक घटना के बाद, विजय सिंह द्वारा एक प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी, जिसमें यह कहा गया था कि बाबूराम नाम के एक बड़ई की विधवा को एफ.आई.आर. में नामित व्यक्ति, जिसका नाम मतरू था, द्वारा परेशान किया जा रहा था। जब प्रथम सूचनादाता के भाई राम चन्द्र सिंह ने मतरू को बाबूराम की विधवा को परेशान न करने की चेतावनी दी, तो मतरू अपने भाई राजवीर के साथ एक लाइसेंसी बंदूक लेकर उसके घर आया और राम चन्द्र सिंह की हत्या कर दी। प्रथम सूचनादाता ने एफ.आई.आर. में कहा कि वह और उसके पुत्र, अनंगपाल सिंह और सरबान सिंह, घटना स्थल पर मौजूद थे। उनके द्वारा शोर मचाने पर कई ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए। एफ.आई.आर. में यह भी उल्लेख किया गया था कि मतरू और राजवीर का घर प्रथम सूचनादाता की झोपड़ी के पड़ोस में था। इसके अतिरिक्त, सूचनादाता

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



ने बताया कि लालटेन की रोशनी में उन्होंने मतरू और राजवीर को उन व्यक्तियों के रूप में पहचाना, जो उनके घर आए थे और राम चन्द्र सिंह की हत्या किए थे।

3- एफ.आई.आर. दर्ज होने के बाद विवेचना के दौरान, पुलिस ने घटना स्थल से 12-बोर का एक चला हुआ कारतूस एकत्र किया। उन्होंने सादी मिट्टी और खून से सनी मिट्टी भी एकत्र किया। विवेचना अधिकारी ने लकड़ी का एक टुकड़ा बरामद किया, जिस पर खून लगा था। वह चारपाई जिस पर मृतक बैठा था, उसे भी बरामद किया गया और इन वस्तुओं की फर्द बरामदगी तैयार की गई। इसके पश्चात, अगले दिन अर्थात् 15.10.1986 को पंचायतनामा आयोजित किया गया। इसके बाद पोस्टमार्टम परीक्षण किया गया। पुलिस ने अनेक व्यक्तियों से साक्ष्य प्राप्त किए और अंततः विजय सिंह, अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह के विरुद्ध इस वाद में अभियुक्त के रूप में आरोप-पत्र दाखिल किया। विजय सिंह प्रथम सूचनादाता था, और अनंगपाल सिंह तथा सरभान सिंह उसके पुत्र थे। दिनांक 3.6.1988 को आरोप-पत्र न्यायालय पहुँचने पर, न्यायालय द्वारा तीनों अभियुक्तों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 302 और 211 के अंतर्गत आरोप विरचित किए गए।

4- चूँकि पुलिस ने प्रथम सूचनादाता विजय सिंह को उसके पुत्रों अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह के साथ अभियुक्त के रूप में नामित करके अनिवार्य रूप से प्रकरण को बदल दिया था, इसलिए प्रस्तुत किए गए अभियोजन साक्षी मतरू पी.डब्ल्यू.-1 (विजय सिंह द्वारा दर्ज एफ.आई.आर. में अभियुक्त), अतर सिंह पी.डब्ल्यू.-2, राज पाल पी.डब्ल्यू.-3 और गुलेसर पी.डब्ल्यू.-4 थे। ये व्यक्ति कथित घटना के प्रत्यक्षदर्शी और तथ्य के साक्षी थे।

5- अपनी मुख्य परीक्षा में, पी.डब्ल्यू.-1 ने कथन किया कि वह राम चन्द्र सिंह को जानता था, जिसका एक भाई प्रथम सूचनादाता विजय सिंह (अब एक अभियुक्त) था, जो अपने दो पुत्रों (वे भी अभियुक्त) के साथ न्यायालय में उपस्थित हुआ था। उसने आगे बताया कि विजय सिंह के तीन पुत्र थे: बलराम सिंह, अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह। पी.डब्ल्यू.-1 ने उल्लेख किया कि राम चन्द्र सिंह के पास कुछ कृषि भूमि थी, जिसे वह अन्य दो पुत्रों अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह को छोड़कर, बलराम सिंह को देना चाहते थे। इस मंशा के कारण, मृतक राम चन्द्र सिंह, अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह के बीच अक्सर मौखिक विवाद होते रहते थे। दोनों पुत्रों, अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह का उनके पिता विजय सिंह द्वारा निरंतर समर्थन किया जाता था। उसने बताया कि प्रश्नगत रात को लगभग 11:00 से 11:30 बजे के बीच, वह घर में सो रहा था और सटा हुआ घर केवल एक दीवार से अलग था। उसने बताया कि राम चन्द्र सिंह, बलराम अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



सिंह (विजय सिंह के पुत्रों में से एक), और विजय सिंह अपने अन्य दो पुत्रों अनंगपाल सिंह और सरभान सिंह के साथ एक ही घर में लेकिन अलग-अलग रह रहे थे। उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को, उसने अभियुक्त को चिल्लाते और गाली देते हुए सुनने की सूचना दी। उसने विजय सिंह को राम चन्द्र सिंह से अपनी संपत्ति का समान हिस्सा अपने तीनों पुत्रों को देने के लिए कहते हुए भी सुना। इस चिल्लाहट को सुनकर, वह, राजवीर और उसकी पत्नी रामा देवी छत पर चले गए। वहाँ से, उन्होंने मौखिक विवाद देखा, जिसके दौरान विजय सिंह ने सरभान सिंह को अपनी बंदूक लाने के लिए कहा। विजय सिंह के निर्देश के बाद, सरभान सिंह बंदूक लेने के लिए दौड़ा और फिर उससे राम चन्द्र सिंह की हत्या कर दी। उसने आगे बताया कि उस समय, बाबू सिंह, अतर पाल सिंह और छोटे लाल ने घटना को देखा था। उसने बाद में बताया कि उसे पता चला कि विजय सिंह ने मतरू और राजवीर को इस वाद में झूठा फंसाया था। उसने जो उद्देश्य बताया वह यह था कि दोनों घरों को अलग करने वाली दीवार के कारण मतरू और उसके भाई की विजय सिंह के साथ शत्रुता थी। प्रति-परीक्षा के दौरान, उसने बताया कि वह और राजवीर सगे भाई थे। उनके दादा जुदाई सिंह थे, जो नारायण सिंह के पुत्र थे। नारायण सिंह के भाई कल्लू सिंह थे। कल्लू सिंह के दो पुत्र थे: खुशाल सिंह और सरनाम सिंह। खुशाल सिंह के पुत्र बाबू सिंह और लाखन सिंह थे। उसने बताया कि यह वही बाबू सिंह था, जो मौके पर मौजूद था और उसे प्रत्यक्षदर्शी के रूप में नामित किया गया। हालाँकि, घटना के बाद बाबू सिंह की मृत्यु हो गई। उसने फिर बताया कि अतर पाल दूसरा प्रत्यक्षदर्शी था, जिसका उसने उल्लेख किया था, और अतर पाल लाखन का पुत्र था। उसने आगे बताया कि सरनाम सिंह का पुत्र सोहम सिंह था, जिसका पुत्र राज पाल था, और राज पाल भी एक प्रत्यक्षदर्शी था। प्रति-परीक्षा में, उसने बताया कि बढ़ई राम बाबू की विधवा राम बेटी थी, और यह कहना गलत था कि उस रात उसने राम बेटी को किसी भी तरह से परेशान किया गया था। उसने यह भी बताया कि यह कहना गलत था कि राम चन्द्र सिंह और विजय सिंह ने उसे राम बेटी के उत्पीड़न के संबंध में डांटा था। उसने आगे बताया कि रिपोर्ट में गलत कहा गया था कि उसने राम बेटी को परेशान किया था। उसने बताया कि उसकी जानकारी में, पुलिस द्वारा राम बेटी का बयान कभी अंकित नहीं किया गया था। इसके पश्चात, एक विशिष्ट प्रश्न पूछे जाने पर कि क्या अभियुक्त और सूचनादाता के घरों के बीच की दीवार के संबंध में विवाद का कोई वाद, कोई कागजी कार्रवाई या कोई साक्ष्य था, उसने बताया कि दीवार के संबंध में कोई वाद लंबित नहीं था; हालाँकि, इसके संबंध में दो पंचायत बैठकें हुई थीं। उसने फिर बताया कि पुलिस स्टेशन में एक रिपोर्ट आदि हुई थी, लेकिन उसके पास दीवार के विवाद से संबंधित

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



कोई कागज नहीं था। उसने आगे बताया कि उसने घटना के समय राम चन्द्र सिंह को चारपाई पर बैठे देखा था। छत से, जहाँ से उसने घटना देखी थी, उसने उल्लेख किया कि उस समय वह स्वयं, राजवीर सिंह और राजवीर की पत्नी मौजूद थे और वहाँ कोई अन्य व्यक्ति नहीं था। अपनी प्रति-परीक्षा में, उसने बताया कि उसने विजय सिंह द्वारा दर्ज एफ.आई.आर. को कभी नहीं पढ़ा था। उसने पुष्टि की कि उसने जो बताया था, उसे बाबू सिंह, अतरपाल, राजवीर सिंह, राजपाल सिंह, अंत राम, गुलशेर और अन्य लोगों ने भी पुष्ट किया था। इसके बाद, उसने कहा कि उसे अपने विरुद्ध रिपोर्ट के बारे में पहली बार तब पता चला जब पुलिस ने उसे सूचित किया। उसने बताया कि यद्यपि उसके पास लाइसेंसी बंदूक नहीं थी, लेकिन उसके भाई राजवीर के पास एक थी।

6- पी.डब्ल्यू.-2 अतर सिंह है। उसने कथन किया कि उसके पिता का नाम राम सिंह है। उसने आगे उल्लेख किया कि घटना की तिथि को लगभग 11:00 बजे रात में, वह अपने घर पर था। राम चन्द्र सिंह के घर पर मौखिक विवाद सुनकर वह वहाँ गया और पाया कि विजय सिंह राम चन्द्र सिंह से कह रहा था कि तीनों पुत्रों को समान माना जाना चाहिए और प्रश्न किया कि बलराम सिंह को अधिक संपत्ति क्यों दी जा रही है। राम चन्द्र सिंह ने उत्तर दिया कि वह अपनी संपत्ति का वितरण अपनी इच्छानुसार करेंगे। उस बिंदु पर, अतर सिंह ने बताया कि उसने विजय सिंह को अपने पुत्रों से उसकी बंदूक लाने के लिए कहते देखा। सरभान सिंह ने इस निर्देश का पालन करते हुए बंदूक लेने के लिए दौड़ लगाई और राम चन्द्र सिंह पर गोली चला दी, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसने फिर बताया कि वह अपने घर लौट आया। घटना के समय, उसने यह भी बताया कि गुलशेर, रामपाल सिंह और बाबू सिंह मौजूद थे। प्रति-परीक्षा के दौरान, उसने बताया कि घटना की तिथि को चौकीदार मौजूद था, लेकिन उसने चौकीदार को सूचित नहीं किया था। घटना में राजपाल सिंह, गुलशेर और बाबू सिंह शामिल थे, जो उसके साथ खड़े थे। उसने बताया कि उसके घर में उसकी माँ, उसका छोटा भाई सत्यपाल सिंह, उसकी पत्नी और सत्यपाल सिंह की पत्नी रहती थी। उसने आगे कहा कि उसके घर के दक्षिण में राजवीर सिंह का निवास था, जहाँ मतरू भी रहता था। उसने उल्लेख किया कि मौखिक विवाद के दौरान, न तो गुलशेर ने और न ही उसने स्वयं स्थिति बिगड़ने से रोकने के लिए हस्तक्षेप किया। उसने बताया कि जब राम चन्द्र सिंह को गोली मारी गई, तो उसने अभियुक्तों को पकड़ने का प्रयास नहीं किया और न ही कोई रिपोर्ट दर्ज कराई। उसने स्वीकार किया कि वह जानता था कि विजय सिंह ने राजवीर और

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



मतारू के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई थी; उसे घटना के तीसरे दिन यह पता चला था। इस जानकारी के बावजूद, उसने पुलिस को इसकी सूचना नहीं दी थी।

7- पी.डब्ल्यू.-3, जिसका नाम राजपाल है, ने बयान दिया कि उसके पिता का नाम पोपे सिंह था। उसने बताया कि वह विजय सिंह, अनंग पाल सिंह और सरभान सिंह को जानता था, और राम चन्द्र सिंह से भी परिचित था। उसने आगे बताया कि विजय सिंह और राम चन्द्र सिंह चार भाइयों में से थे: सोनपाल सिंह, फूल सिंह, राम चन्द्र सिंह और विजय सिंह। उसने बयान दिया कि वह प्रश्नगत दिन खेती से संबंधित मामलों के लिए मतारू के घर गया था। पहुँचने पर, राम चन्द्र सिंह, विजय सिंह, अनंग पाल सिंह और सरभान सिंह बातचीत कर रहे थे। लगभग 11:00 बजे रात में, सरभान सिंह ने राम चन्द्र सिंह से पूछा कि उसने अपनी संपत्ति तीनों भाइयों में समान रूप से क्यों नहीं बाँटी है। राम चन्द्र सिंह ने उत्तर दिया कि यह उसकी पसंद थी और वह अपनी संपत्ति अपनी इच्छानुसार वितरित करेगा। इस पर, पी.डब्ल्यू.-3 के अनुसार सरभान सिंह ने अभिकथित तौर पर कहा कि यदि संपत्ति तीनों भाइयों में समान रूप से नहीं बाँटी गई, तो वह राम चन्द्र सिंह की हत्या कर देगा। तत्पश्चात, विजय सिंह ने अनंग पाल सिंह को बंदूक लाने के लिए कहा। अनंग पाल सिंह तब घर गया, लाइसेंसी बंदूक ले आया, उसे सरभान सिंह को सौंप दिया, जिसने फिर राम चन्द्र सिंह की गोली मारकर हत्या कर दी थी। पी.डब्ल्यू.-3 ने यह भी कहा कि उसने अभियुक्त को यह कहते सुना, "उसे मरने दो, और मतारू के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई जाएगी।" उसने मतारू, राजवीर सिंह, अतर पाल सिंह और गुलशेर सिंह को प्रत्यक्षदर्शियों के रूप में पहचाना। प्रति-परीक्षा पर, उसने कहा कि उसके दादा का नाम सरनाम सिंह था। सरनाम सिंह का सगा भाई खुशाल सिंह था, जो कल्लू का पुत्र था। खुशाल सिंह का पुत्र बाबू सिंह था, जो वाद में एक प्रत्यक्षदर्शी था। अतर पाल, जो एक प्रत्यक्षदर्शी भी था, बाबू सिंह का भतीजा था। उसने बताया कि कल्लू सिंह का भाई नारायण सिंह था। उसने आगे कहा कि ठाकुरी सिंह नारायण सिंह का पोता था और ठाकुरी सिंह के पुत्र मतारू और राजवीर प्रकरण में प्रत्यक्षदर्शी हैं। उसने उल्लेख किया कि उसे विजय सिंह द्वारा मतारू और राजवीर के विरुद्ध दर्ज कराई गई रिपोर्ट की जानकारी नहीं थी। उसने बताया था कि जब तक उसका बयान अंकित नहीं हुआ था, तब तक उसे किसी एफ.आई.आर. के दर्ज होने की जानकारी नहीं थी, और उसने पुलिस को अपना बयान दिया था कि वह व्यक्तिगत काम के लिए मतारू के घर गया था। उसने फिर से बताया कि पुलिस को अपना बयान देते समय, उसने उल्लेख किया था कि सरभान सिंह को उसने राम चन्द्र सिंह से यह कहते

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



हुए देखा था कि यदि वह संपत्ति को तीनों भाइयों में समान रूप से नहीं बाँटता है, तो उसे गोली मार दी जाएगी। उसने संबंधित समय पर बाबू सिंह, अतर पाल, छोटे और गुलशेर को प्रत्यक्षदर्शियों के रूप में नामित किया था। उसने बताया कि उसने पूरी घटना मतरू के आंगन से देखी थी, और विजय सिंह तथा मतरू के घरों को अलग करने वाली दीवार लगभग 1.15 गज ऊँची थी, जिससे वह दूसरी तरफ क्या हो रहा है, यह देख सकता था।

8- पी.डब्ल्यू.-4 गुलशेर, जिसे पी.डब्ल्यू.-2 अतर सिंह और पी.डब्ल्यू.-3 राजपाल सिंह द्वारा प्रत्यक्षदर्शी के रूप में नामित किया गया था, हालाँकि, न्यायालय में पक्षद्रोही हो गया। अपनी प्रति-परीक्षा में, वह अपनी मुख्य परीक्षा में कही गई बातों पर कायम रहा।

9- पी.डब्ल्यू.-5 डॉ. एस.आर. गुप्ता हैं, जिन्होंने पोस्टमार्टम परीक्षण किया था और उसे सिद्ध किया। उन्होंने मृतक के शरीर पर चोटों का वर्णन निम्नानुसार किया:

"1. एक आग्नेयास्त्र प्रवेश घाव माप 2.5 सेमी x 2.5 सेमी, आर-पार, पेट के बाईं ओर चोट संख्या 2 के अनुरूप। कालापन मौजूद।

2. काठ क्षेत्र में पेट के दाईं ओर 11 सेमी x 9 सेमी के क्षेत्र में सात आग्नेयास्त्र निकास घाव। दिशा बाईं से दाईं ओर, थोड़ी नीचे की ओर थी।

3. दाहिने वंक्षण क्षेत्र के सामने 3 सेमी x 1 सेमी माप का खरोंच।"

10- पी.डब्ल्यू.-6, विवेचना अधिकारी सुरेन्द्र सिंह दैगरी ने चिक रिपोर्ट सिद्ध करने के बाद उस तरीके को बताया जिससे उन्होंने विवेचना किया था। उन्होंने सभी प्रदर्शियों को भी सिद्ध किया।

11- पी.डब्ल्यू.-7 राम बेटी थी, जो राम बाबू की विधवा थी, जिसे विजय सिंह द्वारा दर्ज एफ.आई.आर. में मतरू द्वारा परेशान किए जाने का अभिकथन किया गया था। उसने न्यायालय के समक्ष अपना बयान दिया और बताया कि विजय सिंह द्वारा दर्ज एफ.आई.आर. में उल्लिखित जैसा कुछ भी उस दुर्भाग्यपूर्ण रात से पहले वाले दिन नहीं हुआ था।

12- इसके पश्चात, एक बचाव साक्षी, अर्थात् अधिवक्ता राजेंद्र कुमार शर्मा को प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि, वास्तव में, राम बेटी द्वारा न्यायालय के समक्ष दिया गया शपथ पत्र उनकी उपस्थिति में निष्पादित किया गया था।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



13- इसके पश्चात, धारा 313 द.प्र.सं. के अंतर्गत अभियुक्तों के बयान अंकित किए गए। विचारण के समापन पर, प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश, एटा ने 17.10.1989 को सरभान सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के अंतर्गत आजीवन सश्रम कारावास की सजा सुनाई और विजय सिंह को धारा 211 भा.द.सं. के अंतर्गत दोषसिद्ध किया। इसके बाद वर्तमान अपील दायर की गई। यह ध्यान दिया जा सकता है कि अनंग पाल सिंह को दोषमुक्त कर दिया गया था।

14- अपीलार्थियों के विद्वान अधिवक्ता विभिन्न अवसरों पर उपस्थित होने में विफल रहे; इसलिए, हमने अपील पर बहस करने के लिए न्याय मित्र के रूप में सुश्री गुंजन शर्मा को नियुक्त किया। उन्होंने हमारे समक्ष वाद प्रस्तुत किया और निम्नलिखित दलीलें दीं:

(i) पी.डब्ल्यू.-1 मतरू ने अपनी मुख्य परीक्षा और प्रति-परीक्षा में श्रेणीबद्ध रूप से बताया कि घटना की तिथि को, अपने घर की छत से उसने घटना देखी। उसके साथ उसका भाई राजवीर और उसकी पत्नी रामा देवी भी मौजूद थे। उसने बताया कि राजवीर और रामा देवी का परीक्षण नहीं किया गया। उसने फिर बाबू सिंह, अतर पाल सिंह और छोटे लाल को प्रत्यक्षदर्शियों के रूप में नामित किया। विचारण के दौरान बाबू सिंह की मृत्यु हो गई। एक अतर पाल सिंह, जिसे पी.डब्ल्यू.-1 ने लाखन के पुत्र के रूप में पहचाना था, उपस्थित हुआ और बताया कि वह अतर सिंह था और उसके पिता का नाम राम सिंह था।

(ii) अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने आगे तर्क प्रस्तुत किया कि पी.डब्ल्यू.-1 का तात्पर्य यह था कि लाखन के पुत्र अतर पाल सिंह ने घटना देखी थी। संयोग से, कठघरे में उपस्थित होने वाला पी.डब्ल्यू.-2 अतर सिंह था, जो उसके अनुसार राम सिंह का पुत्र था। अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने इसलिए कहा कि पी.डब्ल्यू.-2 पी.डब्ल्यू.-1 की कल्पना की उपज था और वास्तव में, घटना के समय अतर पाल सिंह नाम का कोई साक्षी मौजूद नहीं था। इसलिए, विद्वान अधिवक्ता का तर्क है कि चूंकि अतर पाल सिंह की उपस्थिति असत्य सिद्ध हुई, और जब पत्नी रामा देवी और भाई राजवीर साक्षी बॉक्स में उपस्थित नहीं हुए, तो पूरी संभावना है कि पी.डब्ल्यू.-1 स्वयं भी मौजूद नहीं था और केवल अपीलार्थियों को झूठा फंसाने के लिए पी.डब्ल्यू.-1 प्रत्यक्षदर्शी के रूप में उपस्थित हुआ।

(iii) इसके अलावा, अपीलार्थियों के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क प्रस्तुत किया कि पी.डब्ल्यू.-1 ने एक वंशावली प्रस्तुत किया था, जिसमें उसने बताया था कि उसके दादा का नाम जुदाई था, और

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



जुदाई के पिता नारायण सिंह थे। नारायण सिंह के भाई कल्लू थे, और कल्लू के दो पुत्र थे, अर्थात् खुशाल सिंह और सरनाम सिंह। खुशाल सिंह के दो पुत्र थे, अर्थात् बाबू सिंह और लाखन सिंह। पी.डब्ल्यू.-1 ने फिर प्रति-परीक्षा के दौरान, अपनी पारिवारिक वंशावली स्पष्ट करते हुए बताया कि लाखन का अतर पाल सिंह नाम का एक पुत्र था। इसके अलावा, वंशावली देते समय उसने बताया कि सरनाम का सोहम सिंह नाम का एक पुत्र था, और सोहम सिंह का राजपाल नाम का एक पुत्र था। अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने कथन किया कि राजपाल कठघरे में उपस्थित हुआ और बयान दिया कि वह एक पोपे सिंह का पुत्र था, जो पी.डब्ल्यू.-1 द्वारा प्रस्तुत वंशावली से काफी भिन्न है। विद्वान अधिवक्ता ने आगे कहा कि जब वंशावली से संबंधित न होने वाले व्यक्ति को पेश करके एक झूठा वाद लाया जाता है - अर्थात् जब राजपाल, जो पी.डब्ल्यू.-1 के अनुसार सोहम सिंह का पुत्र था, उसे पेश नहीं किया गया, बल्कि उसके स्थान पर पोपे सिंह के पुत्र राजपाल को प्रस्तुत किया गया - तो पी.डब्ल्यू.-1 द्वारा लाया गया वाद असत्य हो जाता है। जैसा कि पहले कहा गया है, जब पी.डब्ल्यू.-1 असत्य बोलता है, तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पी.डब्ल्यू.-1 - मतरू - वास्तव में उपस्थित नहीं था और इस प्रकार झूठ बोल रहा था।

(iv) इसके अतिरिक्त, अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क प्रस्तुत किया कि पी.डब्ल्यू.-1 - मतरू - ने बताया कि उसकी उपस्थिति में सरभान सिंह द्वारा गोली चलाई गई थी, और यह अतर पाल सिंह की उपस्थिति में हुआ था; जबकि पी.डब्ल्यू.-2 ने अपनी मुख्य परीक्षा में (पेपर बुक के पृष्ठ 27) बताया कि पी.डब्ल्यू.-2 अतर सिंह बंदूक चलने की आवाज सुनकर मौके पर पहुँचा था, जिसका अर्थ यह है कि वह मौके पर नहीं था जैसा कि पी.डब्ल्यू.-1 ने बताया था।

(v) इसके अलावा, अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता का कहना है कि पी.डब्ल्यू.-2 ने श्रेणीबद्ध रूप से बताया था कि उसने प्रथम सूचनादाता विजय सिंह को राम चन्द्र सिंह से अपनी संपत्ति तीनों पुत्रों के बीच समान रूप से बाँटने के लिए कहते देखा था। हालाँकि, पी.डब्ल्यू.-3 ने अपनी मुख्य परीक्षा और प्रति-परीक्षा में बताया कि वह सरभान सिंह था, जिसे उसने राम चन्द्र सिंह से अपनी संपत्ति तीनों पुत्रों के बीच समान रूप से बाँटने के लिए कहते देखा था।

(vi) अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क प्रस्तुत किया कि गुलशेर, जिसे तीनों अभियोजन साक्षियों - अर्थात् मतरू, अतर सिंह और राजपाल, जो तथ्य के साक्षी और प्रत्यक्षदर्शी थे - द्वारा प्रत्यक्षदर्शी के रूप में सामान्यतः नामित किया गया था, पक्षद्रोही हो गए थे।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



(vii) अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता ने ऊपर दी गई दलीलों के आलोक में कहा कि अभियोजन का प्रकरण संदिग्ध हो जाता है। उन्होंने आगे तर्क प्रस्तुत किया कि, वास्तव में, न तो मतरू और न ही पी.डब्ल्यू.-2 अतर सिंह और न ही राजपाल सिंह मौजूद थे।

15- विद्वान एजीए श्री मुनि राज मेहरोत्रा ने अपील का विरोध किया और पुरजोर तर्क दिया कि चूंकि चार प्रत्यक्षदर्शी विवरण थे, इसलिए इन विवरणों पर अविश्वास करना और उन्हें हल्के में खारिज करना अनुचित था। उन्होंने तर्क प्रस्तुत किया कि साक्ष्य में छोटे-मोटे विरोधाभास महत्वपूर्ण नहीं होंगे, और इसलिए, उन्हें बहुत अधिक महत्व देने की आवश्यकता नहीं है।

16- न्याय मित्र सुश्री गुंजन शर्मा और विद्वान एजीए श्री मुनि राज मेहरोत्रा को सुनने के बाद, हम पाते हैं कि पी.डब्ल्यू.-1 मतरू ने प्रारंभ में बाबू सिंह, अतर पाल सिंह और छोटे लाल को प्रत्यक्षदर्शियों के रूप में नामित किया था। विचारण के दौरान बाबू सिंह की मृत्यु हो गई थी। छोटे लाल कठघरे में उपस्थित नहीं हुआ। अतर पाल सिंह को प्रति-परीक्षा के अनुसार लाखन के पुत्र के रूप में नामित किया गया था; हालाँकि, कठघरे में उसने बताया कि वह वास्तव में राम सिंह का पुत्र था। हम यह भी पाते हैं कि पी.डब्ल्यू.-2 ने विशेष रूप से राजपाल सिंह को प्रत्यक्षदर्शी के रूप में नामित किया और बताया कि राजपाल सिंह सोहम सिंह का पुत्र था। यह तथ्य पी.डब्ल्यू.-1 ने अपनी प्रति-परीक्षा में भी बताया था, लेकिन हम राजपाल (पी.डब्ल्यू.-3) से दर्ज बयान में पाते हैं कि उसने अपना नाम राजपाल सिंह नहीं दिया था, बल्कि अपनी पहचान केवल राजपाल के रूप में दी थी और अपने पिता का नाम पोपे सिंह बताया था। इसलिए, हम पाते हैं कि अभियोजन पक्ष के साक्षी, जिन्होंने प्रत्यक्षदर्शी और तथ्य का साक्षी होने का दावा किया था, वास्तव में उपस्थित नहीं थे और केवल साक्ष्य गढ़ने का प्रयास कर रहे थे। इसके अलावा, हम बयानों में एक महत्वपूर्ण विरोधाभास देखते हैं। पी.डब्ल्यू.-1 मतरू ने बताया कि उसने विजय सिंह को संपत्ति के वितरण के संबंध में राम चन्द्र सिंह के साथ विवाद में लिप्त सुना था। इसके विपरीत, पी.डब्ल्यू.-3 ने बताया कि उसने बहुत कम दूरी से सुना कि सरभान सिंह विजय सिंह के तीन बच्चों के बीच संपत्ति के वितरण को लेकर राम चन्द्र सिंह से लड़ रहा था। यह विरोधाभास मामूली नहीं है; यह प्रकरण की जड़ तक जाता है। क्या पी.डब्ल्यू.-1 मतरू ने वास्तव में घटना देखी थी, और क्या उसने अपनी मुख्य परीक्षा और प्रति-परीक्षा में जो तथ्य बताए थे, वे पी.डब्ल्यू.-3 द्वारा पुष्ट किए गए थे, यह निर्धारित किया जाना शेष है। यह देखते हुए कि पी.डब्ल्यू.-1 के बयानों को अन्य अभियोजन साक्षियों, विशेष रूप से पी.डब्ल्यू.-3 द्वारा समर्थन नहीं दिया गया था, हम निष्कर्ष

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



निकालते हैं कि एक बड़ा विरोधाभास है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। हम यह भी पाते हैं कि सरभान सिंह द्वारा आग्नेयास्त्र चलाने से केवल एक प्रवेश घाव था। किसी भी साक्षी ने यह नहीं बताया कि अभियुक्त ने दो बार गोली चलाई। पी.डब्ल्यू.-2 ने गवाही दी कि वह बंदूक चलने की आवाज सुनकर मौके पर पहुँचा था, लेकिन उसके अनुसार, अभियुक्त ने उसके बाद एक और गोली चलाई। दूसरी गोली का यह दावा अस्पष्ट बना हुआ है।

17- पूर्वगामी के आलोक में, हमारा यह मत है कि अभियोजन द्वारा प्रस्तुत प्रकरण पूरी तरह से संदिग्ध है। इसलिए, हम यह अभिनिर्धारित करते हैं कि अपीलार्थी सरभान सिंह, जो वर्तमान में जीवित है, आरोपों से दोषमुक्त होने का पात्र है।

18- तदनुसार, एकमात्र जीवित अपीलार्थी सरभान सिंह के संबंध में अपील स्वीकार की जाती है। उसे सभी आरोपों से दोषमुक्त किया जाता है। अपीलार्थी विजय सिंह के संबंध में, जिनकी मृत्यु होने की सूचना है, उनके विरुद्ध अपील पहले ही उपशमित हो चुकी है।

19- हम न्याय मित्र के अथक प्रयासों को स्वीकार करते हैं और उनके शुल्क का निर्धारण 25,000/- रुपये करते हैं, जो उन्हें विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा देय होगा। इस न्यायालय के महानिबंधक भुगतान की निगरानी कर सकते हैं।

(न्यायमूर्ति चवन प्रकाश) (न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा)

13 फरवरी, 2026

पी.के